



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वागड़ क्षेत्र के ऐतिहासिक स्थल : पर्यटन एवं संभावनाएँ

(Historical Places of Vagad Region: Tourism and Possibilities)

**Author – Prakash Yadav, Assistant Professor- History, Government College
Chhoti Sarwan, Banswara Rajasthan.**

Abstract : आधुनिक समय में पर्यटन क्षेत्र में निरन्तर विकास हो रहा है। यह भी माना जाने लगा है, कि यह स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। विकसित देशों में अवकाश का अधिकांश समय घूमने और यात्रा करने में बिताया जाता है। नये स्थानों की खोज, तीर्थाटन, व्यापार-विनिमय आदि कारणों से पर्यटन की सोच का विस्तार हुआ। पर्यटन शब्द का अर्थ है, भ्रमण अर्थात् चहुँदशी घुमना। पर्यटन शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 1811 ई. में किया गया। ज्वतदे शब्द का मतलब एक औजार से है, यह एक पहिए की तरह गोल होता है। इसी ज्वतदवे शब्द से यात्रा चक्र या पैकेज टूर का विचार निर्मित हुआ है। लगभग सन् 1646 में इस शब्द का प्रयोग विभिन्न स्थलों की यात्रा, मनोरंजन, भ्रमण करने के लिए किया गया था। ज्वनत एक हिब्रू शब्द है जो कि हिब्रू शब्द ज्वती से लिया गया है। इसका अर्थ है अध्ययन अथवा खोज। ज्वनत शब्द यहूदी विधान से संबंधित है। यहूदी विधान यहूदियों के रहन-सहन का वर्णन करता है। ज्वनत का अर्थ है कि यात्री किसी विशेष स्थान पर जाकर खोज करता है। ठीक इसी प्रकार एक पर्यटक की जिज्ञासा होती है कि वह उस स्थान के बारे में पूर्ण जानकारी प्राप्त करें जिसके बारे में उसने सुना है और साथ ही उसको व्यापार व रोजगार की संभावनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने, स्वास्थ्य एवं शिक्षा लाभ, पर्यावरण व मनोरंजन के संबंध में पूर्ण जानकारी प्राप्त करने की आकांक्षा रहती है।

Keywords : वागड़ का इतिहास, बांसवाड़ा और डूंगरपुर, आदिवासी संस्कृति और परंपरा, वागड़ का स्थापत्य कला, लोक कला और शिल्प, ऐतिहासिक स्थल, त्रिपुरा सुंदरी मंदिर, राज मंदिर (डूंगरपुर), घाटोल दुर्ग, आनंद सागर झील, श्रीनाथजी मंदिर, पर्यटन और विकास, पर्यटन योजनाएँ, पर्यटक आकर्षण, वागड़ की प्राकृतिक सुंदरता, जलाशय और जल प्रबंधन।

Article : मानव प्रत्येक युग में घूमता रहा है। प्राचीन समय से ही मानव में यात्रा की प्रबल भावना रही है। उस समय भ्रमण का मुख्य उद्देश्य भोजन की खोज करना था। खाने हेतु कंदमूल फल एवं शिकार की खोज में मानव को भ्रमण करना पड़ता था। मानव को रहने, सोने, आश्रम करने के लिए सुरक्षित ऐसे स्थलों को खोजना होता था, जहाँ पर वे जंगली जानवरों आदि से सुरक्षित रह सकें एवं सो सकें। इस प्रकार मानव ने आरंभ में जीविका की तलाश तथा सुरक्षा कारणों से भ्रमण किया। मानव ने अकेले रहने की अपेक्षा समाज में रहना पसंद किया अतः उसने नए लोगों से परिचय, जानकारी तथा दोस्ती करने के लिए यात्रा एवं भ्रमण प्रारंभ किया।

जैसे-जैसे मानव का सांस्कृतिक विकास होता गया, उसकी जिज्ञासायें भी बढ़ती गयी। उसमें जिज्ञासा जागृत हुई कि नए स्थान देखे जायें जहाँ भोजन मिले, रहने के स्थान भी सुरक्षित हों, पीने का पानी भी आस-पास ही उपलब्ध हो तथा अन्य मूलभूत आवश्यकताओं की वस्तुएं इकट्ठी की जा सकें। अतः मानव ने दूर-दूर के स्थानों को देखने की लालसा में भ्रमण किया तथा जो व्यक्ति अधिक भ्रमणशील रहा उसकी जानकारी अन्य लोगों से बढ़ गई। अन्य लोगों ने भी देखा-देखी नई जानकारी प्राप्त करने हेतु यात्राएं आरंभ की। इस प्रकार नये क्षेत्रों की जानकारी तथा ज्ञान की खोज में निकलने वालों की संख्या बढ़ती गयी। लोगों ने समूहों में भ्रमण करना शुरू कर दिया। दूसरे क्षेत्रों में जाने पर अदला-बदली की क्रिया प्रारंभ हुई जिसने बाद में व्यापार का रूप ले लिया तथा लोग व्यापार के लिए यात्रा पर निकलने लगे। कुछ और समय बाद मानव के भ्रमण का मुख्य उद्देश्य अपने धर्म का विकास करने की भावना भी रही जो बाद में धर्म प्रचार के रूप में विकसित हुई। भारत में हिन्दू, यूरेशिया में इस्लाम, यूरोप में ईसाई तथा पूर्वी एशिया में बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु यात्राएं की गयी। इस प्रकार प्राचीन काल से ही मानव आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और सामाजिक कार्यों से अपने ग्राम, नगर, प्रान्त तथा देश से बाहर जाते रहे हैं।

वागड़ क्षेत्र, जो मुख्य रूप से राजस्थान के डूंगरपुर और बांसवाड़ा जिलों में फैला हुआ है, अपनी ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। यह क्षेत्र राजपूताना संस्कृति, आदिवासी परंपराओं और ऐतिहासिक धरोहरों का अनूठा संगम प्रस्तुत करता है। वागड़ क्षेत्र में पर्यटन की अपार संभावनाएँ हैं, जिनका विकास राज्य और स्थानीय सरकारों के साथ-साथ पर्यटन विभाग द्वारा किया जा सकता है।

डूंगरपुर

उदयपुरवाटी महल (उदय महल): महारावल उदय सिंह द्वारा निर्मित यह महल राजपूत स्थापत्य कला का अद्भुत उदाहरण है। महल का निर्माण बांस और पत्थर से किया गया है और इसमें जटिल नक्काशी और चित्रकारी देखी जा सकती है। इस महल को हेरिटेज होटल में बदला जा सकता है, जिससे स्थानीय और विदेशी पर्यटकों को आकर्षित किया जा सके। जस्थान के डूंगरपुर जिले में स्थित है और यह महल वागड़ क्षेत्र की शान है। इसे महारावल उदय सिंह द्वितीय द्वारा बनवाया गया था और यह महल डूंगरपुर शहर के इतिहास, संस्कृति और वास्तुकला की झलक प्रस्तुत करता है। उदय महल अपनी अनूठी वास्तुकला और भव्यता के लिए प्रसिद्ध है। उदय महल का निर्माण 16वीं शताब्दी के दौरान महारावल उदय सिंह द्वितीय के शासनकाल में हुआ। महल वागड़ क्षेत्र के राजाओं की समृद्धि और कलात्मक रुचि का प्रतीक है। यह महल मेवाड़ राजवंश और वागड़ के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों का गवाह है।

वास्तुकला

शैली: उदय महल राजपूत वास्तुकला शैली का उत्कृष्ट उदाहरण है। इसमें पत्थरों और लकड़ी पर बारीक नक्काशी की गई है।

भित्ति चित्र: महल की दीवारों पर भित्ति चित्र और रंगीन कांच का उपयोग इसे और अधिक आकर्षक बनाता है।

झरोखे और जाली: महल में जटिल नक्काशीदार झरोखे और जालीदार खिड़कियां हैं, जो राजपूत कला का अद्वितीय नमूना हैं।

प्राकृतिक दृश्य: महल के ऊपरी हिस्से से डूंगरपुर की खूबसूरत झीलों और पहाड़ियों का दृश्य दिखाई देता है।

पर्यटन महत्व

उदयपुरवाटी महल डूंगरपुर के प्रमुख पर्यटन स्थलों में से एक है। महल का ऐतिहासिक महत्व और स्थापत्य कला पर्यटकों को आकर्षित करता है। महल की सुंदरता और आसपास का प्राकृतिक दृश्य फोटोग्राफी के शौकीनों के लिए आकर्षण का केंद्र है। यहां स्थानीय त्योहारों और परंपराओं का अनुभव किया जा सकता है। उदय महल को हेरिटेज होटल में परिवर्तित करके इसे पर्यटन का केंद्र बनाया जा सकता है। महल में स्थानीय सांस्कृतिक और ऐतिहासिक कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं। महल की भव्यता और ऐतिहासिक वातावरण इसे फिल्म और फोटोग्राफी के लिए आदर्श बनाते हैं।

गौतमेश्वर मंदिर: यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और प्राकृतिक सौंदर्य के बीच स्थित है। इसे धार्मिक पर्यटन के साथ ट्रेकिंग स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है। गौतमेश्वर महादेव का मंदिर अपनी तीन खास मान्यताओं के चलते विश्वभर में अलग पहचान रखता है। आदिवासियों का हरिद्वार कहे जाने वाले गौतमेश्वर महादेव मंदिर में खंडित होने के बाद भी शिवलिंग वंदित है। यह वह स्थान है जहां गौतमऋषि को अपने गो हत्या के पापों से मुक्ति मिली थी। साथ ही यहां स्थित मंडाकनी कुंड में डुबकी लगाने के बाद पाप मुक्ति का सर्टिफिकेट मिलता है। इसे मंदिर के पुजारी की ओर से जारी किया जाता है। साथ ही मान्यता यह भी है कि इस कुंड में यदि कोई दंपती स्नान करता है तो उसे संतान की प्राप्ति भी होती है। अपनी इन्हीं तीन मान्यताओं के कारण इस मंदिर का खासा महत्व है। हिन्दू धर्म-शास्त्रों में खंडित देव प्रतिमाओं, खंडित शिवलिंगों और तस्वीरों के पूजन को शुभ नहीं माना जाता लेकिन गौतमेश्वर ऐसा शिवालय है, जहां गौतमेश्वर महादेव दो भागों में विभाजित हैं। पूरी तरह से खंडित शिवलिंग की पूजा होती है।



झोथरी बावड़ी: ऐतिहासिक बावड़ी (सीढ़ीदार कुआं) प्राचीन जल संग्रहण प्रणाली और वास्तुकला का परिचायक है। इसे एक ऐतिहासिक जल संरक्षण मॉडल के रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है।

बांसवाड़ा

माही डैम और जाखम डैम : ये दोनों बांध प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध हैं और आसपास पिकनिक स्थल के रूप में विकसित किए गए हैं। वॉटर स्पोर्ट्स, बोटिंग और इको-टूरिज्म के लिए ये आदर्श स्थान हैं।

त्रिपुरा सुंदरी मंदिर: यह मंदिर हिंदू श्रद्धालुओं के लिए एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है। यहां देवी त्रिपुरा सुंदरी की मूर्ति स्थापित है। इसे धार्मिक पर्यटन केंद्र के रूप में और अधिक प्रचारित किया जा सकता है।

आनंद सागर झील: ऐतिहासिक झील जो स्थानीय वनस्पतियों और पक्षियों का आश्रय स्थल है। इसे बर्ड वॉचिंग और इको-फ्रेंडली टूरिज्म हब के रूप में विकसित किया जा सकता है।



सांस्कृतिक धरोहर

गवरी नृत्य: यह आदिवासी भील जनजाति का प्रमुख लोक नृत्य है, जो हर साल मानसून के दौरान प्रस्तुत किया जाता है। इस नृत्य को पर्यटन उत्सवों में शामिल करके सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है।

भील समाज की परंपराएं: भील जनजाति की जीवनशैली, आभूषण, और त्योहार पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र हो सकते हैं। ग्राम पर्यटन के तहत इन परंपराओं को प्रदर्शित किया जा सकता है।

प्राकृतिक पर्यटन स्थल

साबला हिल्स: हरे-भरे पहाड़ और घाटियां ट्रेकिंग और प्रकृति प्रेमियों के लिए उत्कृष्ट स्थान हैं। साहसिक पर्यटन के तहत इसे प्रचारित किया जा सकता है।

राम कुंड: ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व का यह स्थल शांत और प्राकृतिक वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। धार्मिक और प्राकृतिक पर्यटन का मिश्रण प्रस्तुत करता है।

पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सुझाव

इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास: सड़क, होटल और परिवहन सुविधाओं को सुधारने की आवश्यकता है।

स्थानीय कला और शिल्प का प्रचार: आदिवासी कारीगरों के उत्पादों को बाजार तक पहुंचाने और पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए प्रदर्शनियों का आयोजन किया जा सकता है।

ईको-फ्रेंडली पर्यटन: वागड़ की प्राकृतिक संपदाओं को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण-अनुकूल पर्यटन को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन: क्षेत्रीय मेले और त्योहार जैसे बनास उत्सव या माही उत्सव को राष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित किया जा सकता है।

पर्यटक मार्गदर्शन केंद्र: प्रमुख पर्यटन स्थलों पर सूचना केंद्र स्थापित किए जाने चाहिए।

सरकार स्वदेश दर्शन योजना के तहत डूंगरपुर-बांसवाड़ा सहित पूरे टीएसपी क्षेत्र को ट्राइबल टूरिज्म सर्किट के तहत विकसित कर रही है। इसके लिए करीब 117 करोड़ की लागत से प्रस्ताव बनाकर भेजे गए हैं। इन जिलों के प्राचीन, धार्मिक और ऐतिहासिक स्थलों का संरक्षण होगा। इन स्थलों पर सैर पर आने वाले पर्यटन के लिए विकसित किया जाएगा। यहां पर ऐतिहासिक धरोहर का संरक्षण किया जाएगा।

पर्यटन विभाग उदयपुर की उपनिदेशक शिखा सक्सेना ने बताया कि डूंगरपुर बादल महल, फतेहगढ़ी, मुरला गणेश, देवसोमनाथ, नागफनी, चूंडावाड़ा, आशापुराधाम निठाउवा, विजवामाता धाम, बेणेश्वर धाम, मुरला गणेश, गलियाकोट क्षेत्र के लिए 41.38 करोड़ के विकास कार्य किए जाएंगे।

इनके साथ बांसवाड़ा के त्रिपुरा सुंदरी, मानगढ़, कागदी पिकअप व्यू, भीमकुंड, मंगलेश्वर, चाचाकोटा, जोगनियामाता को पर्यटन के लिए आकर्षक बनाने का कार्य किया जाएगा। इसके लिए पर्यटन विभाग की ओर से प्रस्ताव बनाकर भेजा गया है। लोकसभा चुनाव के बाद इन प्रस्ताव पर वित्तीय स्वीकृति मिलने की आस है। इसके अलावा उदयपुर जिले के ऋषभदेव, सलुम्बर महल, फुलवारी की नाल, जयसमंद, लेक पार्क के लिए करीब 27.88 करोड़ रुपए खर्च होंगे। धरियावाद के सीतामाता सेंचूरी को भी विकसित किया जाएगा। इसके अलावा प्रतापगढ़ के गौतमेश्वर, गंगेश्वर, जाखम बांध को भी विकसित किया जाएगा।

जनजाति क्षेत्र की पहचान होगी : डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़ और उदयपुर क्षेत्र में रहने वाले जनजाति क्षेत्र की पहचान को ट्राइबल ट्यूरिस्ट प्लेस के रूप में की जाएगी। इसके लिए यहां के जनजाति के रीति-रिवाज और संस्कृति को विश्व पटल पर स्थापित किया जाएगा। वही ट्राइबल के लिए वागड़ में मौजूद मुख्य धर्म स्थल को संरक्षित किया जाएगा।

निष्कर्ष : वागड़ क्षेत्र में ऐतिहासिक धरोहरों और प्राकृतिक सुंदरता की भरमार है। उचित योजना और प्रचार-प्रसार से यह क्षेत्र राजस्थान के प्रमुख पर्यटन स्थलों में शामिल हो सकता है। इसके अलावा, स्थानीय संस्कृति और परंपराओं को संजोकर न केवल आर्थिक विकास को बढ़ावा दिया जा सकता है, बल्कि भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को भी संरक्षित किया जा सकता है।

References :

1. अग्रवाल, अनिता, (1990) "राजस्थान में पर्यटन योजना" पृ. सं. 21, 22 नई दिल्ली।
2. आनन्द एन. के. (2009) पर्यटन में पंचायती राज की भूमिका, केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका, नई दिल्ली, पृ सं. 10-17
3. प्रो. इन्द्रपाल, (1992) जयपुर सिटी प्रदेश, इण्डियन ज्योग्राफी कांग्रेस, जयपुर दिस. 27-29, पृ.सं. 13, प्रकाशन, जयपुर
4. ईरिस्किलन के. डी., (1992) "राजपूताना गजिटियर्स, द वेस्टर्न राजपूताना स्टेट्स रेजिडेंसी एण्ड बीकानेर"
5. विटेज बुक, गुड़गाँव (रिप्रिंटेड, 1992)
6. ईरिक, लाज, (1995) "ट्यूरिज्म डेस्टिनेशन मैनेजमेन्ट इश्यू एनालिसिस एण्ड पोलिसी" गटप्प लंदन
7. एच. एस. मन (1974) डजर्ट इकोसिस्टम एण्ड इम्प्रूवमेन्ट पृ सं. 1-38
8. ए.के. भाटिया, (1986) "ट्यूरिज्म डवलपमेन्ट प्रिंसिपल एण्ड प्रेक्टिसेज" स्टर्लिंग पब्लिशिंग प्रा.लि. नई दिल्ली, चतुर्थ संस्करण, पृ.सं. 95

